ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO. 188-191
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

पूर्व मध्यकालीन (1200 से 1500 ईस्वी) में विभिन्न संस्कृतियों में एक रुपता लाने में संगीत, संगीतज्ञो व संतों की भूमिका

डॉ0 मंजरी तिवारी

प्रवक्ता– संगीत विभाग, देव इंटरनेशनल कॉलेज, अलवर, (राजस्थान), भारत

सारांश : *12 वीं शताब्दी में दो संस्कृतिया का मिलन तो हुआ ही था, हिन्दू और मुस्लिम। जब दो संस्कृतियों का मिलन होता है, तो कुछ समय पश्चात वे एक दूसरे को अवश्य ही प्रभावित करती है।*

हमारे देश में समय–समय पर अनेक जातियां आती रहीं। 12वीं शताब्दी के बाद तुर्क आक्रमणकारियों और भारतीयों के प्रतिदिन के संघर्ष के कारण देश का राजनैतिक जीवन दूषित होता रहा, परन्तु शताब्दियों तक स्थाई रूप से साथ रहने के कारण एक दूसरे पर पड़ने वाले प्रभाव को नही रोका जा सकता था। कलाओं ने मुस्लिम समाज को प्रभावित किया जिन्होंने आपसी कटुता को दूर कर एकता का बीज बोया।

संगीत के महान गायक हिन्दू भी है और मुसलमान भी। राम, कृष्ण, शिव, अल्ला, करीम सभी पर रचनाएँ उपलब्ध है। संगीत किसी धर्म या जाति की धरोहर ना तो रहा है और ना रहेगा। इसे हर धर्म व जाति में स्थान मिला है गुरुद्वारे में गुरुवाणी, मस्जिद में कव्वाली, मंदिरों में भजन , गिरिजा घरों में प्रार्थना के रूप में संगीत ही है। संतों व संगीतज्ञो ने संगीत का ही सहारा लेकर दोनो संस्कृतियों में एकता तथा समन्वय की भावना स्थापित करने का प्रयास किया।

जबकि संगीत में विलासिता आ रही थी, उस समय कुछ संगीत शास्त्रियों ने उसे अध्यात्म से जोड़ने का प्रयत्न किया। संतों ने रामायण व महाभारत महाकाव्यों को आधार मानकर भारतीय संस्कृति को बचाया! इस समय की वास्तु व संगीत कला में समन्वय की भावना देखने को मिलती है।

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

पूर्व मध्यकाल (1200 से 1500 ई.) में इतिहासकारों की सर्वसम्मति से निम्न वंशों का काल निर्धारण इस प्रकार है।

1. गुलाम वंश 1206 – 1290
2. खिलजी वंश 1290– 1320
3. तुगलक वंश 1320–1412
4. सैयद वंश 1414–1451
5. लोदी वंश 1451–1526

सूफी मुसलमान अर्ध धार्मिक सम्मेलन संगठित करते थे, जिनमें कव्वालिया गाई जाते थी कुछ सूफी संत विशेषकर चिश्ती वंश के संत अजमेर के मोइनुद्दीन चिश्ती, दिल्ली के निजामुद्धीन औलिया को कव्वालियों में बहुत आनन्द आता था, उन्होंने संगीत के भक्ति स्वरुप पर विशेष बल दिया था[1]

वाचस्पति गैरोला ने लिखा है " दक्षिण में भक्त गायकों का उदय हुआ। जो वैष्णव तथा मन्दिरों में मण्डलीयाँ बनाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भगवान की लीलाओ को गा–गाकर अपने उपास्य के प्रति अगाध भक्ति का परिचय देते रहे। उनमें समाज के सभी व्यक्ति वर्गो के लोग सम्मलित थे।[2]

इस्लामी शासकों ने भारत पर आक्रमण और आधिपत्य अवश्य किया परन्तु वे सभी यही के होकर रह गए। अपनी संस्कृति का प्रभाव भारत पर छोड़ते हुए स्वयं भी यहां की संस्कृति में रच बस गए अतः साहित्य, कला व अन्य सभी सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्र में एक नई मिली जुली संस्कृति उभरी जो समाज के सभी वर्गों में फैल गई।[3]

पूर्व मध्यकाल में भारत में मुसलमानों के रूप में जो जाति बाहर से आई , वह पूर्व में आई हुई आगन्तुकों से भिन्न थी। वह यहाँ के हिन्दू सामाजिक व्यवस्था में विलीन ना हो सकी दोनों के ही आचार–विचार एक दूसरे से भिन्न थे जिसमें हिंदुओ को अपनी प्राचीन परम्पराओं पर गर्व था तो मुसलमानों को अपने विजयी होने का।

राजनैतिक दृष्टि से हारे हिन्दू स्वयं को सांस्कृतिक दृष्टि से हीन मानने को तैयार नहीं थे। इस तरह पूर्व मध्यकाल दो संस्कृतियों के टकराव का युग था।[4]

ऐसी परिस्थितियों में संत कवियों व कुछ मुस्लिम शासकों ने हिंदू–मुसलमान के आपसी भेद को समाप्त करके उनमें सद्भावनाओं का संचार किया।

भक्त कवियों की सांगीतिक देन को कभी भुलाया नहीं जा सकता। इन्होंने अपने काव्य को सरस और मधुर बनाने

के लिए स्वरों का जो रूप रखा, उसने इतिहास में एक अलग स्थान बना लिया। जिसके कारण आज भी और भविष्य में भी संगीत की भक्ति धारा निरन्तर प्रभावित होती रहेगी।[5] सल्तनत का आरम्भिक काल भयंकर संघर्षों का काल था।

विदेशी आक्रमणकारियों की समझ में यहाँ के धर्म व इस धर्म पर आधारित कला व सामाजिक व्यवस्था समझ नही आती थी, और वे इसे कुफ्र कहकर नष्ट कर देना चाहते थे, परन्तु वे धीरे–धीरे यह समझ गये कि वे जिसे नष्ट कर देना चाहते हैं, वह नर्गिस का पौधा नहीं बल्कि बरगद का विशाल वृक्ष है जिसकी जड़े कटती जाती हैं, निकलती जाती है वह अपनी जड़ों व विशाल तने के बल पर अपनी प्राचीन परम्परा पर जीवित रहता है।

धीरे –धीरे एक पड़ोसी ने दूसरे को सहानुभूति से देखा। दोनों मिल कर बैठे और सांस्कृतिक विनिमय आरम्भ हुआ। बाहर से आने वाली नई प्रेरणाओं को धीरे –धीरे स्वीकार किया गया। और भारतीय मूल के आधार पर एक मिली जुली संस्कृ ति का उदय हुआ।[6]

इन्डोनेशिया संस्कृति को प्लावित व पुष्पित करने के लिए शेख निजामुद्दिन चिश्ती ने खुसरो का मार्ग दर्शन किया। चिश्ती परम्परा के संतों और कव्वालों ने इन्द्रप्रस्थ मत को भारत के कोने–2 में पहुंचा दिया।[7]

संतों ने मानव जीवन की कुरुपता को नष्ट किया, और अपने संगीत के द्वारा मानवता को उज्जवल रूप दिया।[8] जब मुस्लिम सुल्तान अपनी संस्कृति को बढावा दे रहे थे, तभी संतों ने दोनों महाकाव्यों का आधार लेते हुए हमारी संस्कृति को बढावा दिया। सूफी संतों का समाज में विशेष स्थान था, किन्तु वे अलगाव पूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। और नगर के बाहर रहते थे। जनता पर उनका विशेष प्रभाव था क्योंकि उच्च विचारों और पवित्र जीवन के उनके सिद्धांतों को लोग अत्याधिक पसन्द करते थे [9] संतों में सत्यनिष्ठा, लोक मंगल की कामना, उपदेश आदि की प्रवृत्तियों के कारण उनको समाज सुधारक' की संज्ञा प्रदान की गई।[10]

भारतीय संस्कृति के अभ्युत्थान में इन संतों का योगदान मानव समाज की दुष्टि से अपूर्व है नामदेव महाराष्ट्र के सबसे बड़े संत थे। उनके कुछ मुस्लिम शिष्य भी थे जो हिंदू हो गये थे![11]

संत रामानंद (1370–1440ई०) ने समाज के सभी तत्वों को एकता के रूप में पिरोने का सफल प्रयास किया।[12] आपने हिन्दू मुस्लिम सभी को शिक्षा प्रदान किया।[13] बंगाल के चौतन्य महाप्रभु ने श्री कृष्ण भक्त बनकर संसार में श्री कृष्ण की निष्काम माधुर्य भक्ति का प्रचार किया । इन्हे राधावतार भी कहा जाता। इन्होंने भी नाम संकीर्तन द्वारा कृष्ण भक्ति का प्रचार किया।[14] बलभाचार्य जी ने ब्रज मंण्डल में घूम घूमकर विद्वानों शास्त्रार्थ किया और कृष्ण भक्ति का प्रचार किया।[15]

इन्होंने पराधीनता जन्य की विकट अनुभूति से तड़पती हुई आर्य जाति के पुष्टि मार्ग के पोषण द्वारा जीवित रखने का स्तुत्यः प्रयत्न किया। सम्भवतः इस पुष्टिमार्गीय चहल पहल में मुसलमानों के वैभव का भी कुछ प्रभाव हो, पर इसमें संदेह नहीं कि इस प्रकार की पूजा पद्धति ने हिन्दुत्व को स्थिर रखने में बड़ी सहायता की।

सन्त कबीर का उद्देश्य प्रेम से अर्थ द्वारा हिन्दू और मुसलमान जाति के मध्य एकता स्थापित करना था। उन्होंने हिन्दू और मुसलमान के उन सिद्धांतों को अस्वीकार कर दिया जो मनुष्य के वास्तविक आध्यात्मिक विकास एवं कल्याण के लिए अनुपयुक्त थे।[16] उस समय समाज की स्थिति बड़ी सोचनीय थी। 11 वी शताब्दी में मुसलमानो के आक्रमण से अस्थिरता के कारण भारत की संगीत पद्धति बिखर चुकी थी , जिसे इकठ्ठा करने की चेष्ठा कश्मीरी पंडित शारंगदेव जी ने देवनागरी में की थी![17]

देश में संगीत के माध्यम से धर्म और दर्शन का प्रसार किया गया, यहां के लोगों में कला की जड़ें गहरी जम गई![18] संत व संगीतज्ञो के संगीत के माध्यम से यह परिणाम निकला कि दोनो ही धर्मों के लोग एक दूसरे के समीप आने लगे, और एक दूसरे के रीति रिवाजों को सम्मान की दृष्टि से देखने लगे।

पूर्व मध्यकाल में जब हमारी संस्कृति पर दूसरे सम्प्रदायो की संस्कृति हावी हो रही थी तो इन्ही संगीत शास्त्री व संगीतज्ञो ने अपने काव्य व संगीतात्मक उपदेश, भजन आदि के माध्यम से रुढिवादिता तथा छुआछूत का परित्याग कर भारतीय संस्कृति को सम्भाला। इस प्रकार संगीत के माध्यम से अर्थ और दर्शन का प्रसार किया। इसलिये यहाँ के लोगो में संगीत और कला की जड़े गहरी जम गई। उस समय के ग्रंथ सांगीतिक दृष्टि से तो उपयोगी है ही साथ ही हमारी संस्कृति को भी संजोय हुए है। नागौर का काजी हमिद्दीन, इल्तुतमिश का दरबारी कवि था, उसके द्वारा सूफी संगीत की सर्वप्रियता बढ़ी और लोगो ने उसमें अबोध रूप से भाग लेना आरंभ किया[19] किरानुस्सादेन से ज्ञात होता है कि अमीर खुसरो ईरानी संगीत के मर्मज्ञ थे।[20] अमीर खुसरो का समय बलवन से गयासुद्दीन तुगलक तक रहा जलालुद्दीन खिलजी के दरवार में मेहर अफरोज

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

जैसी गायिकाएं थी।[21]

जिन्होंने राग संगीत को भक्ति का मार्ग बनाया इन्होंने राग रागिनी को भक्ति का माध्यम बनाकर भक्ति तथा संगीत को एक दूसरे का पूरक बना दिया मंदिरों के प्रांगण से सुवाषित होती हुई राग रागिनी की स्वर लहरी भारतीय परिवारों के प्रांगण तक गूंज उठी। और हवेली संगीत के नाम से प्रसिद्ध हुई।[22]

इस काल में वास्तु व संगीत कला में समन्वय की भावना देखने को मिलती है हिंदू मुस्लिम मिश्रित शैली का व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है क्योंकि उस समय संगीत संस्कृत भाषा में था एवं प्रबंध का प्रचलन था जो विदेश की समझ से परे था इस कारण भी भारतीय संस्कृति की इस मुख्य विधा को इस विलासिता युक्त संगीत का नवीनीकरण कर राज दरबार में मनोरंजन मात्र बना दिया।

परंतु संतों ने धर्म के नाम पर होने वाले अत्याचारों को अपने पदों के माध्यम से रोका इसके विपरीत लोक संगीत जो की परंपरागत था और नगर से दूर ग्रामों में एवं निर्धन जनों में पनप रहा था इसमें आध्यात्मिकता निहित रही क्योंकि इसमें देवी देवताओं का आधार अधिक था संगीतकार अपनी स्वरावली में काव्य का आधार लेकर जनमानस में अपनी भावनाओं को रसमय कर व्यक्त करता था। इस समय आदर्श और यथार्थवाद का युद्ध हुआ एक में कल्पना और दूसरे में भौतिकता की प्रधानता थी इस समय ही ईरानी संगीत से ख्याल का प्रचलन हुआ 13वीं शताब्दी में अमीर खुसरो ने मुकाम पद्धति बनाई उन्होंने ईरानी संगीत के सम्मिश्रण से कुछ नए राग व ताले बनाई।

ब्रजभाषा में रचित कुछ गीतों को विभिन्न अवसरों पर अनिवार्य रूप से गाया जाना खुसरो की ही देन है अमीर खुसरो ने भारतीय संगीत की प्रशंसा तो की है लेकिन उसमें ईरानी सिद्धांतों का सम्मिश्रण किया। सुल्तानों ने अधिकतर हिंदू स्त्रियों से ही विवाह किये। जैसे कैकूवाद व अमीर खुसरो की मां हिंदू ही थी। तत्पश्चात उन हिंदू स्त्रियों के संस्कारों का प्रभाव उनकी संतान पर पड़ा। उस्ताद रहीम फहीमुद्दीन डागर साहेब ने कहा भी है कि ध्रुपद किसी 12 मात्रा या चौताल का नाम नहीं है ध्रुपद, नाम है भारतीय संस्कृति का।

इस समय संगीत तीन धाराओं में बह रहा था –

1. दरबारों में दरबारी गायको द्वारा –राजा, नवाबों और बादशाहों की प्रवृत्ति के अनुकूल दरबारी गायक विभिन्न गायन वादन की विधाओं से उन्हें प्रसन्न करते थे।

2. जनसाधारण में गायको द्वारा –इसके अंतर्गत महान गेय कवियों की रचनाएं गाकर वह आध्यात्मिक प्रवृत्ति से ओतप्रोत भजनों को मंदिरों में गाकर साधारण जनमानस का मनोरंजन करते थे।

3. ग्रामीण अंचलों में लोक गायको द्वारा– परंपरागत लोकगीतों का प्रदर्शन कर ग्रामीण अंचलों में जनमानस का रंजन करते थे।

उद्देश्य – इस शोध पत्र का विषय "पूर्व मध्यकालीन (1200 – 1500 ईस्वी) में विभिन्न संस्कृतियों में एकरूपता लाने में संगीत, संगीतज्ञो,और संतों की भूमिका है।" मेरे मन में ऐसा विचार आया कि हिंदू और मुस्लिम संस्कृति अत्यधिक अलग है इन दोनों के बीच एकरूपता लाने में संगीत की क्या भूमिका रही इसी विचार को मैने समझने की कोशिश की, ढूंढने का प्रयास किया और इसी विचार ने मुझे इस दिशा में कार्य करने की प्रेरणा दी।

निष्कर्ष– ऐतिहासिक अध्ययन से ज्ञात होता है कि पूर्व मध्यकाल में हिंदू और मुस्लिम दो संस्कृतियों का मिलन हुआ कलाओं ने मुस्लिम शासको व समाज को प्रभावित किया इस समय संतों व संगीत शास्त्रियों ने अपने गैय काव्य के माध यम से भारतीय संस्कृति को संभाला। इनकी सांकेतिक देन को कभी बुलाया नहीं जा सकता।

जब मुस्लिम अपनी संस्कृति को बढ़ावा दे रहे थे तब संतों ने दोनों महाकाव्यों का आधार लेते हुए भारतीय संस्कृ ति को बढ़ावा दिया फिर एक पड़ोसी ने दूसरे को सहानुभूति से देखा, दोनों मिलकर बैठे और सांस्कृतिक विनिमय आरंभ हुआ। बाहर से आने वाली प्रेरणाओं को भी स्वीकार किया गया और फिर एक मिली जुली संस्कृति का उदय हुआ। संत रामानंद ने समाज के सभी तत्वों को एकता के सूत्र में पिरोया तो बंगाल में चौतन्य महाप्रभु ने कृष्ण भक्ति का प्रचार किया। अमीर खुसरो ईरानी संगीत के मर्मज्ञ थे और ईरानी संगीत से ही ख्याल का प्रचलन हुआ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्री वास्तव आशीर्वाद लाल – मध्यकालीन भारतीय संस्कृति – पृष्ठ 227.

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

2. वाचस्पति गैरोला – भारतीय संस्कृति और कला – पृष्ठ 523.
3. खंडे डॉ कलाश्री – मध्यप्रदेश में शास्त्रीय संगीत की विकास यात्रा – पृष्ठ 3.
4. सिंह वासुदेव – हिंदी साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – पृष्ठ 66.
5. शर्मा श्रीमती महारानी – संगीत पत्रिका 1980 – पृष्ठ 30.
6. अवस्थी डॉक्टर रामनाथ – मध्यकालीन भारतीय कलाए और उनका विकास – पृष्ठ 25.
7. बृहस्पति आचार्य कैलाश चंद्र देव – ध्रुपद और उसका विकास – पृष्ठ 80.
8. शर्मा भगवत शरण – भारतीय संगीत का इतिहास – पृष्ठ 97.
9. शर्मा एवं खुराना – मध्यकालीन भारत – पृष्ठ 140.
10. सिंह नेपाल – उत्तर भारत के सांस्कृतिक विकास में संतों का योगदान – प्रश्न 288 – 89.
11. श्रीवास्तव आशीर्वादी लाल – मध्यकालीन भारतीय संस्कृति – पृष्ठ 61.
12. बुद्ध प्रकाश – भारतीय धर्म और संस्कृति – पृष्ठ 152.
13. चौरसिया केशनी प्रसाद – मध्यकालीन हिंदी संत कबीर एवं साधना – पृष्ठ 187.
14. ललितावती – उत्तर भारत में भक्ति परंपरा का इतिहास – पृष्ठ 100.
15. नाभादास – भक्त माल 1960 – पृष्ठ 349.
16. ललितावती – उत्तर भारत में भक्ति परंपरा का इतिहास– पृष्ठ 89.
17. पाठक ताराचंद – इंफ्लूएंस ऑफ इस्लाम ऑन इंडियन कल्चर –पृष्ठ 150.
18. बृहस्पति आचार्य कैलाश चंद्र देव – ध्रुपद और उसका विकास – पृष्ठ 79.
19. संगीत पत्रिका जून 1963 – पृष्ठ 254.
20. खन्ना जितेंद्र सिंह – भारतीय संगीत और आचार्य बृहस्पति – पृष्ठ 142.
21. आचार्य बृहस्पति – ध्रुपद और उसका विकास – पृष्ठ 44.
22. अवस्थी डॉक्टर रामनाथ – मध्यकालीन भारतीय कलाएं एवं उनका विकास – पृष्ठ 24.
23. सिन्हा डॉक्टर सुरेखा – मध्ययुगीन शास्त्रीय संगीत के आधार स्तंभ तथा अष्ठ सखा – (भूमिका से)।

*****

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14